दीन का इल्म हासिल करना

मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी.

'नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.'

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

1] बुखारी व मुस्लिम

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया की जिस शख्स को अल्लाह तआला भलाई देना चाहता है उसे अपने दीन का इल्म और समझ देता है. जाहिर है की दीन का इल्म और समझ तमाम भलाईयों का सरचश्मा है, जिस्को ये चीज़ मिली, उसे दीन और दुनिया की सआदत मिली, वो उस्से अपनी ज़िन्दगी संवारेगा और अल्लाह के दूसरे बन्दों की ज़िन्दगीयों को भी संवारने की कोशिश करेगा.

2] मुस्लिम

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया जो शख्स दीन का इल्म हासिल करने के लिए सफर करे तो अल्लाह उस्के लिए जन्नत की राह आसान करेगा और जो लोग अल्लाह के घरों मै से किसी

घर (मस्जिद) मै जमा होकर अल्लाह की किताब पढते और उसपर बहस और बात चीत करते है उनपर अल्लाह तआला की तरफ से ईमानी सुकून उतरता है, रहमत उन्को ढाँक लेती है, फरिश्ते उन्को घेर लेते है, और अल्लाह तआला उन्का ज़िकर अपने फरिश्तों की मजलिस मै फरमाते है, और जिस्को उस्के अमल ने पीछे डाल दिया उस्का नसब उसे आगे नहीं बढा सकता. इस हदीस मै आपﷺ ने एक तरफ दीन का इल्म हासिल करने वालों को खुशखबरी दी है और दूसरी तरफ उन्को इस खतरे से सावधान किया है की दीन का इल्म सीखने का मकसद उसपर अमल करना है, अगर किसी ने अमल ना किया तो अपने सारे इल्मी खज़ाने के बावजूद पीछे रह जाएगा, ना ये इल्म उसे आगे बढाएगा और ना उस्की खानदानी शराफत कुछ काम देगी. ऊँचा उठाने वाली चीज़ सिर्फ अमल है.

3] मिश्कात, रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस रदी.

एक दिन रसूलुल्लाहﷺ मस्जिदे नबवी मै आए, दो जमाअतें,

वहा बैठी थीं (एक जमाअत ज़िकर और तसबीह मै मशगूल थी और दूसरी जमाअत के लोग दीन सीखने और सिखाने मै लगे हुए थे) आपﷺ ने फरमाया दोनों जमाअतें नेक काम मै लगी हुई है लेकिन उन्मे से एक जमाअत दूसरी जमाअत से अफज़ल है. ये लोग तो ज़िकरे इलाही और दुआ और इस्तिगफार मै लगे हुए है अल्लाह चाहेगा तो इन्हें देगा, ना चाहेगा तो नहीं देगा, रही ये दूसरी जमाअत तो ये लोग दीन सीखने और सिखाने मै लगे हुए है और मुझे मुअल्लिम (सिखाने वाला) ही बना कर भेजा गया है. ये कहकर आपﷺ उसी जमाअत के साथ बैठ गए.